

गुरु नानक – सबद २१  
असंख नाव असंख थाव ॥  
जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ४

असंख नाव असंख थाव ॥  
अगम अगम असंख लोअ ॥  
असंख कहहि सिर भार होइ ॥  
अखरी नाम अखरी सालाह ॥  
अखरी गिआन गीत गुण गाह ॥  
अखरी लिखण बोलण बाण ॥  
अखरा सिर संजोग वर्खाण ॥  
जिन एहि लिखे तिस सिर नाहि ॥  
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥  
जेता कीता तेता नाउ ॥  
विण नावै नाही को थाउ ॥  
कुद्रत कवण कहा वीचार ॥  
वारिआ न जावा एक वार ॥  
जो तुध भावै साई भली कार ॥  
तू सदा सलामत निरंकार ॥ १९ ॥

सारः आध्यात्मिक शब्दों पर ध्यान भक्ति के गंभीर विवेक को खोल सकता है। विवेक को किताबी ज्ञान, अनुभवात्मक शिक्षा, आलोचनात्मक सोच और धैर्य के मिश्रण की आवश्यकता होती है। इसमें वह चेतना शामिल है जो विविधता में एकता की जागरूकता प्रदान करती है।

असंख नाव असंख थाव ॥  
असंख्य पहचानें असंख्य क्षेत्रों में निवास करती हैं।

अगम अगम असंख लोअ ॥

अनंत की अतुलनीय विशालता को समझने की कोशिश ।

असंख कहहि सिर भार होइ ॥

यह खुलासा करती है कि असंख्य प्रकृति की विशालता का एक अंदाज़ा है ।

अखरी नाम अखरी सालाह ॥

आध्यात्मिक शब्दों पर चिंतन करने से गहन ज्ञान प्राप्त हो सकता है जो श्रद्धा के योग्य है ।

अखरी गिआन गीत गुण गाह ॥

ज्ञान के माध्यम से प्राप्त अनुभूति के आधार पर, व्यक्ति अच्छे विचार को व्यक्त और विकसित करता है ।

अखरी लिखण बोलण बाण ॥

ज्ञान के शब्द, जब बोले और लिखे जाते हैं, संजीवनी का काम करते हैं ।

अखरा सिर संजोग वखाण ॥

एकता के साथ किसी के जुड़ाव को निर्धारित करने में विवेक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

जिन एहि लिखे तिस सिर नाहि ॥

जो इस संगति को अपनाते हैं उन्हें चिंतन के माध्यम से ज्ञान प्राप्त होता है ।

जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥

सार्वभौमिक कानूनों की स्वीकृति के अनुसार इस संगति को नियुक्त और प्राप्तकिया जा सकता है ।

जेता कीता तेता नाउ ॥

सर्वव्यापक चेतना ही समस्त सृष्टि की रचयिता है; इसकी सर्वव्यापकता चिंतन के योग्य है ।

विण नावै नाही को थाउ ॥  
एकता पर गहरे चिंतन के बिना कोई अन्य सक्षम स्थान नहीं है।

कुदरत कवण कहा वीचार ॥  
प्रकृति में विविधता की शक्ति को कैसे समझा जा सकता है?

वारिआ न जावा एक वार ॥  
इसकी विशालता को एक पल के लिए भी समेटा नहीं जा सकता।

जो तुध भावै साई भली कार ॥  
जो कुछ भी प्रकृति के नियमों द्वारा निर्धारित है वह सार्वभौमिक कल्याण के लिए उत्कृष्ट है।

तू सदा सलामत निरंकार ॥ १९ ॥  
सर्वव्यापी चेतना अनंत और निराकार है। (१९)

तत्त्वः: गुरु नानक कहते हैं कि विविधता में एकता के सार्वभौमिक नियम की शक्ति को समझने, आत्मसात करने और स्वीकार करने को पूर्णतः सम्मिलित नहीं किया जा सकता है।

---

पहलकदमी  
Oneness In Diversity Research Foundation  
वेबसाइट: [OnenessInDiversity.com](http://OnenessInDiversity.com)  
ईमेल: [onenessindiversityfoundation@gmail.com](mailto:onenessindiversityfoundation@gmail.com)